वाल्मीकि रामायण पर आधारित 'श्रीराम कथा'

प्रकाशनार्थ

गोरखपुर, 08 सितम्बर। श्री गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर में युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त श्री दिग्विजयनाथ जी महाराज की 48वीं एवं राष्ट्र सन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की तृतीय पुण्यतिथि समारोह के अन्तर्गत श्रीगोरखनाथ मन्दिर में चल रही वाल्मीकि रामायण पर आधारित **'श्रीराम कथा ज्ञान–यज्ञ'** के छठवें दिन कथा व्यास जगद्गुरू रामानन्दाचार्य **स्वामी रामानन्द दास जी महाराज ने** भक्तों से खचाखच भरे **महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति सभागार** में श्रीराम कथा को विस्तार देते हुए श्रीराम विवाह के पश्चात् अयोध्या में उत्सव के बीच तीनों लोकों में महाराजा दशरथ के सुकृतियों की चर्चा के साथ प्रारम्भ की। श्रीराम सामान्य धर्म के पालन कर्ता है। उनका आचरण एवं व्यवहार अनुकरणीय है। जबकि लक्ष्मण विशेष धर्म भरत विशेषतर धर्म तथा शत्रुध्न विशेषतम धर्म के पालनकर्ता है। राजा भरत, शत्रुध्न के साथ अपने नैनिहाल चले जाते है। कथा राम के राज्याभिषेक की ओर बढ़ती है और कथाव्यास कहते है अयोध्या में श्रीराम विवाह के पश्चात महाराजा दशरथ से उनके मंत्रियों एवं जनता द्वारा श्रीराम को राजा बनाने का आग्रह किया जाने लगता है और दशरथ के मन में राम के राज्याभिषेक का संदर्भ जन्म लेता है। वे गुरू वशिष्ठ से अपनी जिज्ञासा कहते है और वशिष्ठ कहते है कि हे राजा इस शुभ कार्य में विलम्ब की जरूरत नही है। किन्तु गुरू की यह बात राजा दशरथ के ध्यान में नही आती और वे राज्याभिषेक कल तक के लिये टालते है। कथा यह सन्देश देती है कि भी शुभ कार्य को तुरन्त करना चाहिये। सत्कर्म अथवा शुभकार्य के लिये कोई शुभ मुहुर्त देखनी की जरूरत नही।

कथा यहा से मोड़ लेती है और भगवान के प्रति भक्ति का क्षणिक सन्दर्भ अपना स्थान ग्रहण करता है। कथा व्यास के साथ भक्तों से खचाखच भर चुका सभागार वाद्ययन्त्रों की धुन और तालियों की थाप पर गा पड़ता है। श्रीराम कथा यहीं से करवट लेती है और कथा में राम के बनवास और कैकयी का संदर्भ कथा का केन्द्र बिन्दु बनता है जो कैकेयी कहती थी **'प्राण ते अधिक राम प्रिय मोरे, इनके तिलक क्षोभ कस तोरे।'** वही कैकेयी आज विधि के विधान से श्रीराम को 14वर्ष के वनवास का कारण बनती है। कैकेयी कोप भवन में महाराजा दशरथ से कहती है– 'सुनहुँ प्राणप्रिय भावति जी का, अब देउ एक वर भरतहिं टीका' और दूसरा वर श्रीराम के वनवास का मांगती है। सूचना पाकर श्रीराम पिता दशरथ और माता कैकयी का आदेश लेकर जब कौशल्या से मिलते है और कहते है पिता ने वनगमन का आदेश दिया है तो कौशल्या कहती है पिता से पुत्र पर मॉ का अधिकार दस गुना अधिक होता है। किन्तु राम संभलते है और पुनः कहते है कि मुझे वनगमन का आदेश माता कैकयी और पिता दशरथ दोनों ने दिया है जिस पर मॉ कौशल्या चुप हो जाती है। ऐसी प्रसंग ही भारत के संयुक्त परिवार संस्था के स्वरूप को प्रतिभाषित करते है। श्रीराम कथा एक आदर्श परिवार की कथा है। भगवान के साथ लक्ष्मण और सीता वनगमन का आदेश प्राप्त करते है और अयोध्यावासियों के साथ वे तमसा नदी तक पहुँचते है जहां अयोध्यावासी को सोते हुये छोड़ राम–सीता और लक्ष्मण सहित आगे बढ़ जाते है।

वनगमन की कारूणिक कथा श्रृंगवेरपुर में निषादराज गुह और केवट के साथ भगवान पर केन्द्रित होती हुई भगवान और भक्त के सम्बन्धों पर टिक जाती है और पूरा सभाभवन श्रीराम–केवट संवाद के अन्तर्गत कथा व्यास के चुटिलें अंदाजों पर ठहाका लगाने लगता है। जहां भगवान उपदेश करते है कि इस धरा पर सुख और दुख कहीं से प्राप्त नही होते, सभी जीवों को अपना कर्म यही पर भोगना पड़ता है। श्रीराम का चरित्र इन सब सुख–दुःख से परे है क्योकि सुख–दुःख, हानि–लाभ, जीवन–मृत्यु सब उन्हीं के हाथ में है। अतः वनवास श्रीराम के लिये धर्म की स्थापनार्थ एक विधि का विधान था और इसी के साथ श्रीराम गंगा तट पर पहुँचते है और केवट के साथ उनका रोचक प्रसंग प्रारम्भ हो जाता है और फिर जिस ब्रह्म का मरम कोई जान

न सका भक्ति के बल पर एक साधारण केवट कहता है– मॉगी नाव न केवट आना, यह केवट सामान्य व्यक्ति नही यह वही है जो पूर्व जन्म में कछुआ था, फिर बहेलिया था और केवट बन बैठा है। श्रीराम केवट संवाद के साथ भक्ति रस अपने शिखर पर पहुचता है और पूरे सभागार में भक्त झूमने लगते है और केवट की भक्ति से सराबोर सभागार में भक्ति रस छा जाता है और अन्ततः केवट जिद भरे अन्दाज में कहता है – बिन पग धोहे नाथ, नाव न तुझे चढ़ाइयों' श्रीराम एवं केवट संवाद भगवान एवं भक्त के बीच अद्वितीय संवाद है। भगवान को केवट अपनी नाव से सुरसरी पार कराता है। श्रीराम कथा में इसके बाद प्रयाग स्थित भारद्वाजमुनि आश्रम का वर्णन प्रारम्भ हो जाता है। श्रीराम भारद्वाजमुनि से मिलते है और आगे का रास्ता पूछकर उनके बताये मार्ग पर बाल्मीकि के आश्रम पहुॅचते है। बाल्मीकि श्रीराम के रहने के स्थान पूछने पर ब्रह्म के 14 स्थानों पर निवास का रोचक उल्लेख करते है और चित्रकूट पर्वत पर रहने का श्रीराम को सुझाव देते है। चित्रकूट पर्वत पर श्रीराम के निवास के साथ कथा विश्राम पाती है और तद्पश्चात श्री रामायण की आरती सम्पन्न होती है। श्रीराम कथा ने आज विश्राम लिया।

इस अवसर पर मुख्य यजमान श्री पुष्पदन्त जैन, श्री भगवती जालान, श्री विकास जालान, श्री संतोष कुमार अग्रवाल उर्फ शशि जी, श्री नारायण अजीत सरिया, श्री अरूण कुमार अग्रवाल उर्फ लाला बाबू, श्री अवधेश सिंह, श्री अशोक जालान, श्री गंगा राय, श्री चन्द्र बंसल, श्री अजय सिंह, श्री विनोद कुमार राना, श्री अभिषेक सिंह, श्रीमती उर्मिला सिंह, श्री जितेन्द्र बहादुर चन्द, श्री प्रदीप जोशी, श्री संजय कुमार गुप्ता, श्री कृष्ण कुमार गुप्ता, श्री ईश्वर मिश्र, श्री सीताराम जायसवाल, श्री बृजेश यादव, श्री महेन्द्र पाल सिंह, श्री चन्द्र प्रकाश अग्रवाल, श्री अतुल सर्राफ, अमरनाथ चटर्जी, रमाशंकर शुक्ला आदि थे। कथा का संचालन संस्कृत विद्यापीठ के प्राचार्य डॉ0 अरविन्द्र कुमार चतुर्वेदी ने किया।

कथा के अमृत मंत्र

1. सत्यपथ पर चलो, सत्कार्य करो।
2. किसी का स्वभाव समझकर ही व्यवहार करना चाहिए।
3. सनातन धर्म के साथ चलना चाहिए।
4. हमारे मन्दिरों का वर्णन भागवत में है, जिससे इनकी प्राचीनता का पता चलता है।
5. दुःख में दुःख को याद करने से दुःख बढ़ता है और प्रभु को याद करने से दुःख कम होता है।
6. सच्चा मित्र अपने मित्र के वैभव से ईर्ष्या नहीं करता है।
7. भगवान मंगलो के मंगल हैं।
8. श्रद्धा, भक्ति और समर्पण से प्रभु प्रसन्न होते हैं।
9. प्रभु के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहिए।
10. शरणागत को प्रभु निर्भय बना देते हैं।